सुसमाचार

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
दो

मत्ती रचित सुसमाचार

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका....4

नोट्स....5

I. परिचय (0:20)....5

II. पृष्ठभूमि (1:50)....5

A. लेखक (3:50)....5

1. परंपरागत दृष्टिकोण (4:49)....5

2. व्यक्तिगत इतिहास (11:23)....6

B. मूल श्रोता (17:16)....6

1. परमेश्वर का राज्य (18:26)....6

2. यहूदी रीति-रिवाज़ (23:00)....6

C. अवसर (25:41)....7

1. समय (26:46)....7

2. स्थान (28:39)....7

3. उद्देश्य (30:55)....7

III. संरचना तथा विषय-वस्तु (35:11)....8

A. परिचय : मसीहा राजा (38:01)....8

1. वंशावली (38:18)....8

2. यीशु के जन्म का विवरण (42:04)....8

B. राज्य का सुसमाचार (46:23)....9

1. मसीहा आ गया था (46:39)....9

2. पहाड़ी उपदेश (53:06)....9

C. राज्य का विस्तार (59:07)....10

1. यीशु के आश्चर्यकर्म तथा प्रतिक्रियाएं (59:20)....10

2. राजा के राजदूत (1:07:09)....11

D. चिह्न और दृष्टांत (1:09:38)....11

1. चिह्न और प्रतिक्रियाएं (1:09:54)....11

2. राज्य के दृष्टांत (1:13:05)....12

E. विश्वास और महानता (1:17:50)....12

1. यीशु पर विश्वास करने से इनकार (1:18:10)....12

2. परमेश्वर के राज्य में महानता (1:24:59)....13

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

F. वर्तमान विरोध तथा भविष्य में विजय (1:27:47) 14
1. प्रचंड विरोध (1:28:11) 14
2. भावी विजय (1:33:45) 14
G. यीशु की सेवा की समाप्ति (1:38:38) 15
1. संघर्ष (1:39:27) 15
2. शिष्यता (1:41:27) 15
3. विजय (1:43:04) 15
IV. मुख्य विषय (1:46:42) 16
A. पुराने नियम की धरोहर (1:47:00) 16
1. उद्धृण और संकेत (1:49:47) 16
2. स्वर्ग का राज्य (1:53:07) 16
3. मसीहा राजा (1:55:07) 16
4. अविश्वासी यहूदी अगुवे (1:56:16) 16
5. दीनता और नम्रता (2:00:54) 17
B. परमेश्वर के लोग (2:03:36) 17
1. कलीसिया (2:04:24) 17
2. परमेश्वर का परिवार (2:09:33) 17
3. बुलाहट (2:16:01) 18
V. उपसंहार (2:20:38) 18
पुनर्समीक्षा के प्रश्न 19
उपयोग के प्रश्न 25

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
  - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
  - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
  - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
  - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें** — जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
  - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
  - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
  - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

II. पृष्ठभूमि (1:50)

सभी प्राचीन लेखन एक विशेष प्रकार के ऐतिहासिक, साहित्यिक, भाषासंबंधी, पुरातत्वीय और धार्मिक संदर्भ में लिखे गए हैं तथा वे हमारे संदर्भ से बिल्कुल भिन्न हैं।

क्योंकि जब लेखकों लिखते हैं तो वे माँ लेते हैं कि पाठक उसी संस्कृति के हिस्सा हैं जिस संदर्भ में वह लेख लिखा गया है।

A. लेखक (3:50)

1. परंपरागत दृष्टिकोण (4:49)

- कलीसिया की आरम्भिक सदियों से
- प्राचीन हस्तलेख
- शीर्षक

मत्ती के लेखक होने के आरंभिक दावे मत्ती के ज्यादा प्रभावशाली न होने कारण भी मजबूती प्राप्त करते हैं।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हियरापोलिस के पापियास, कैसरिया के यूसेबियस, लियोन्स के आयरेनियस और टरटूलियन सबने मत्ती को इस सुसमाचार के लेखक के रूप में पहचाना।

2. व्यक्तिगत इतिहास (11:23)

- यहूदी

- चुंगी लेनेवाला

B. मूल श्रोता (17:16)

मत्ती का सुसमाचार यहूदी मसीहियों के लिए प्रयुक्त था।

1. परमेश्वर का राज्य (18:26)

2. यहूदी रीति-रिवाज़ (23:00)

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. अवसर (25:41)

1. समय (26:46)

- आरंभिक तिथि : 60 के दशक के मध्य से अंत तक हो सकता है।
- बाद की तिथि : पहली सदी के अंत तक

2. स्थान (28:39)

रोमी साम्राज्य में पाया जाने वाला फिलिस्तीन, सीरिया या अन्य यहूदी बाहुल्य क्षेत्र।

3. उद्देश्य (30:55)

कि वे अपने मसीहारुपी राजा के रूप में यीशु पर अपने विश्वास को रखें।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. संरचना तथा विषय-वस्तु (35:11)

A. परिचय : मसीहा राजा (38:01)

1. वंशावली (38:18)

मत्ती ने इस्राएल के राजा दाऊद और यहूदी लोगों के पिता अब्राहम पर विशेष बल दिया है।

2. यीशु के जन्म का विवरण (42:04)

यीशु अर्थात् मसीहा का जन्म हो चुका है।

यीशु का कोई मानवीय पिता नहीं था। बल्कि, परमेश्वर ही उसका पिता था।

परमेश्वर ने अपने सिद्ध पुत्र को राजा होने के लिए भेजा ताकि उसकी आशीष की प्रतिज्ञाएँ पूरी हो सकें।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. राज्य का सुसमाचार (46:23)

1. मसीहा आ गया था (46:39)

- यूहन्ना की घोषणा : 3:1-12
- यीशु का बपतिस्मा: 3:13-17
- यीशु की परीक्षा : 4:1-11
- यीशु का सुसमाचार का प्रचार : 4:12-17

"मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।"

- यीशु ने अपने चेलों को बुलाया : 4:18-22
- शिक्षा देते हुए और बीमारों चंगा करते हुए : 4:23-25

2. पहाड़ी उपदेश (53:06)

यीशु ने राज्य के नागरिकों के धार्मिक जीवनों का वर्णन किया।

धार्मिकता की चुनौती उससे कहीं बड़ी है जितनी यहूदी अगुवों ने कल्पना की थी।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर केवल बाह्य व्यवहार पर नियंत्रण में ही रुचि नहीं रखता, वह चाहता है कि आज्ञाकारिता मन से निकले।

यीशु ने अपने विश्वासयोग्य अनुयायियों को आश्वासन दिया कि राज्य हमारा ही है।

C. राज्य का विस्तार (59:07)

1. यीशु के आश्चर्यकर्म तथा प्रतिक्रियाएं (59:20)

- कोढ़ी : 8:1-4
- सूबेदार का सेवक : 8:5-13
- पतरस की सास : 8:14-17
- तूफान : 8:18-27
- दुष्टात्मा से ग्रसित दो मनुष्य : 8:28-34
- झोले का मारा हुआ : 9:1-8
- चुँगी लेनेवाले और पापी : 9:9-17
- एक लड़की और एक महिला : 9:18-26
- दो अंधे : 9:27-31
- दुष्टात्मा से ग्रसित एक मनुष्य: 9:32-34
- यीशु का तरस खाना : 9:35-38

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मत्ती ने यीशु की सामर्थ पर ध्यान देने के अतिरिक्त यीशु की सामर्थ के प्रति भीड़ की प्रतिक्रिया पर भी प्रकाश डाला

- विरोध
- भय
- जानबूझ कर तिरस्कार

2. राजा के राजदूत (1:07:09)

- यीशु ने अपने चेलों को यह प्रार्थना करने की आज्ञा दी कि परमेश्वर प्रचारकों और अगुवों को खड़ा करे।
- यीशु ने सेवकाई के लिए बारह चेलों को सामर्थ देने के द्वारा राज्य की व्यक्तिगत सेवा को फैलाया।
- यीशु ने उन्हें राज्य की उपस्थिति की घोषणा करने की आज्ञा दी।

D. चिह्न और दृष्टांत (1:09:38)

1. चिह्न और प्रतिक्रियाएं (1:09:54)

- यूहन्ना बपतिस्मा दाता : 11:2-19
- शहरों : 11:20-30
- सब्त के दिन चंगाई : 12:1-21
- बालजबूल की शक्ति : 12:22-37
- योना का चिह्न: 12:38-50

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. राज्य के दृष्टांत (1:13:05)

- बीज बोने वाला : 13:1-23
- जंगली बीज : 13:24-30
- राई का दाना और खमीर : 13:31-43
- छिपा हुआ धन और मोती : 13:44-46
- जाल : 13:47-53

यीशु ने यह शिक्षा दी कि स्वर्ग का राज्य अत्यंत बहुमूल्य है इसलिए इसे किसी भी कीमत पर प्राप्त कर लेना चाहिए।

विश्वास में कई बाधाएं हैं और अधिकांश लोग राज्य का तिरस्कार कर देंगे।

E. विश्वास और महानता (1:17:50)

1. यीशु पर विश्वास करने से इनकार (1:18:10)

- नासरत के लोग : 13:54-58
- हेरोदेस एवं यूहन्ना बपतिस्मा दाता : 14:1-12
- पाँच हजार लोगों को भोजन खिलाना : 14:13-21

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- पानी के ऊपर चलना : 14:22-36
- फरीसियों के साथ विवाद: 15:1-20
- कनानी स्त्री 15:21-28
- चार हजार लोगों को भोजन खिलाना : 15:29-39
- फरीसी तथा सदूकी : 16:1-12
- पतरस का अंगीकार: 16:13-20
- पतरस का तिरस्कार : 16:21-27
- यीशु का रूपान्तरण : 17:1-13
- एक जवान जिसको दुष्टात्मा ने जकड़ रखा था : 17:14-23
- मंदिर का कर : 17:24-27

2. परमेश्वर के राज्य में महानता (1:24:59)

- छोटे बच्चों के समान नम्रता : 18:2-4
- कमजोरों की चिंता : 18:5-14
- पाप को दूर करना : 18:15-20
- पापों को क्षमा करना : 18:21-35

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

F. वर्तमान विरोध तथा भविष्य में विजय (1:27:47)

1. प्रचंड विरोध (1:28:11)

- यीशु को यहूदिया में विरोध : 19:1-20:16

  यीशु ने भी यहूदी अगुवों को चुनौती दी।

  यीशु ने अपने शिष्यों को इस विरोध को दृष्टिकोण में बदलने को उत्साहित किया।

- यरूशलेम की ओर जाना : 20:17-34

- यरूशलेम में विरोध : 21:12-22:46

2. भावी विजय (1:33:45)

- सात हाय वचन : 23:1-38

  यह उपदेश विशेषकर फरीसियों, उनकी झूठी शिक्षा, उनके द्वारा परमेश्वर के लोगों के दुरुपयोग, और उनके पाखंड पर केन्द्रित है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- जैतून के पहाड़ का उपदेश: 24:1-25:46
    - प्रसव पीड़ा : 24:4-28
    - राज्य की पूर्णता : 24:29-31
    - महिमा का दिन: 24:32-25:46

G. यीशु की सेवा की समाप्ति (1:38:38)

1. संघर्ष (1:39:27)

जो राज्य यीशु लेकर आया वह उससे बहुत अलग था जिसकी अपेक्षा यहूदियों ने मसीहा से की थी।

2. शिष्यता (1:41:27)

चेलों के लिए यीशु का अनुकरण करना बहुत कठिन था।

3. विजय (1:43:04)

प्रमाण कि मसीहा राजा ने अपने लोगों के सारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. मुख्य विषय (1:46:42)

A. पुराने नियम की धरोहर (1:47:00)

1. उद्धृण और संकेत (1:49:47)

मत्ती ने दूसरे सुसमाचार लेखकों की अपेक्षा सबसे अधिक पुराने नियम को उद्धृत किया है।

2. स्वर्ग का राज्य (1:53:07)

यीशु में परमेश्वर के राज्य की आशीष प्राचीन प्रतिज्ञाओं की पूर्णता थी।

3. मसीहा राजा (1:55:07)

मत्ती ने बल दिया कि यीशु ही मसीहा राजा है।

4. अविश्वासी यहूदी अगुवे (1:56:16)

यीशु ने फरीसियों तथा व्यवस्था के शिक्षकों की शिक्षा को ठुकराया।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. दीनता और नम्रता (2:00:54)

परमेश्वर का महान छुटकारा उसके लोगों के लिए उसकी करुणा में निहित था।

मत्ती ने इस बात पर बल दिया कि यीशु नम्र तथा दयालु राजा था।

B. परमेश्वर के लोग (2:03:36)

1. कलीसिया (2:04:24)

मसीही कलीसिया इस्राएल के लोगों की संगति की निरंतरता है।

कलीसिया यीशु की है।

2. परमेश्वर का परिवार (2:09:33)

परमेश्वर और उसके लोगों के बीच संबंध।

यह शब्दावली उस देखभाल और सुरक्षा पर बल देती है जो परमेश्वर अपनी संतान को प्रदान करता है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. बुलाहट (2:16:01)

उसके लोगों के रूप में हमारी बुलाहट में कठिनाईयाँ, खतरे और दु:ख भी शामिल है।

हमारे राजा के लिए दु:ख उठाना ही महिमा का मार्ग था, और यही हमारे लिए सही है।

V. उपसंहार (2:20:38)

पुराने नियम की स्वर्ग के राज्य की प्रतिज्ञाएँ, मसीहा राजा यीशु के व्यक्तित्व तथा कार्य में पूरी हो गई हैं।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि मत्ती रचित सुसमाचार मत्ती ने लिखा है?

2. हम कैसे जानते हैं कि मत्ती यहूदी श्रोताओं के लिए लिख रहा था?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. मत्ती के सुसमाचार को लिखने का क्या अवसर था?

4. मत्ती के अनुसार हम कैसे जानते हैं कि यीशु मसीहा राजा है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. वह शुभ-संदेश क्या था जिसका प्रचार यीशु ने राज्य के विषय में किया था?

6. यीशु ने राज्य को कैसे फैलाया?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. ऐसे विशेष चिह्न कौनसे थे जो यीशु ने दिखाए, और इन चिह्नों के प्रति क्या प्रतिक्रियाएं हुईं?

8. मत्ती के अनुसार विश्वासयोग्य चेला होने का क्या अर्थ है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. परमेश्वर के राज्य को लाते हुए यीशु ने कैसे विरोध का सामना किया, और राज्य की पूर्णता के विषय में यीशु ने क्या सिखाया?

10. यीशु की सेवकाई की समाप्ति पर कौन-कौनसी घटनाएं हुईं?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. मत्ती ने इस बात पर बल क्यों दिया कि यीशु ने पुराने नियम की मसीहारुपी भविष्यवाणियों और अपेक्षाओं को पूरा किया?

12. मत्ती के अनुसार परमेश्वर के लोग कौन हैं?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. यह बात जान लेना कि मत्ती ही लेखक है, किस प्रकार मत्ती के सुसमाचार को पढने के हमारे तरीके को प्रभावित करता है?
2. कौनसे विशेष रूपों में आप अपनी वर्तमान परिस्थितियों में नम्रता को प्रदर्शित कर सकते हैं?
3. आज अपने जीवन में आप यीशु के प्रति गहरी आज्ञाकारिता को कैसे प्रदर्शित कर सकते हैं?
4. हम सुसमाचारों पर कैसे विश्वास कर सकते हैं और उन्हें विश्वसनीय मान सकते हैं जब उन्हें मानवीय लेखकों द्वारा लिखा गया है?
5. आपने अपने पापों से नियमित रूप से पश्चाताप करने और उन्हें अंगीकार करने की क्रिया से कौनसे लाभों को देखा और अनुभव किया है?
6. आप इस समय कौनसी सेवकाइयां कर रहे हैं और वे परमेश्वर के राज्य के निर्माण में कैसे सहायता कर रही हैं?
7. कौनसे विशेष रूपों में आप मसीहियों और गैर-मसीहियों के प्रति प्रेम को दर्शा सकते हैं?
8. हमें इस बात की परवाह क्यों होनी चाहिए कि यीशु ने पुराने नियम की मसीहारुपी भविष्यवाणियों और अपेक्षाओं को पूरा किए?
9. कलीसिया यीशु की है, यह जानकार हमें कैसा महसूस होना चाहिए?
10. हमें इस बात से कैसा प्रोत्साहन मिलना चाहिए कि हम परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं?
11. यह जानते हुए कि यीशु हमें भरपूरी का जीवन और आशीष देने आया, हमें कष्टों का सामना कैसे करना चाहिए?
12. कौनसी कठिनाइयों और कष्टों का अपने अनुभव किया है और आज भी उनका अनुभव कर रहे हैं?
13. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org